आपातकाल में सृजन फुलवारी

मीना विवेक जैन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

मीना विवेक जैन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-120-6

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, मीना विवेक जैन

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MEENA VIVEK JAIN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	माँ सरस्वती	6
2.	माँ	7
3.	वृद्धावस्था	8
4.	लकड़ी का ऋण	9
5.	सुख-शांति	10
6.	जलता हुआ दिया	11
7.	समझौता	12
8.	जाग जाओ	13
9.	जिंदगी	14
10.	शोहरत	15
11.	रक्तबीज कोरोना	16
12.	होली	17
13.	जीवन-मरण	18
14.	एकता का नज़ारा	19
15.	जयकारा महावीर का	19
16.	प्रेम	20
17.	अवकाश	20
18.	प्रतिशोध	21
19.	प्रबल	21

माँ सरस्वती

माँ सरस्वती के चरणों में, मैं नित-नित शीश झुकाती हूँ।
उनकी वाणी को सुनकर मैं, नत-मस्तक हो जाती हूँ।
मिले स्वर्ग की संपत्ति सारी
नहीं अचम्भा इसमें है,
श्रद्धा सहित तुझे जो ध्यावें
सब कुछ उनके बसमें हैं
करूँ स्तुति मैया की मैं
ध्यान उन्हीं का लगाती हूँ,
उनकी वाणी को सुनकर मैं, नत-मस्तक हो जाती हूँ।
माँ सरस्वती के चरणों में, मैं नित-नित शीश झुकाती हूँ।
मोह जाल में फंसी हुई हूँ
धर्म ज्ञान नहीं जाना है
तेरे द्वार पे आई हूँ मैं
अब तुमको पहचाना है,
करूँ प्रार्थना मैया की मैं
उनका ही गुण गाती हूँ,
उनकी वाणी को सुनकर मैं, नत-मस्तक हो जाती हूँ।
माँ सरस्वती के चरणों में, मैं नित-नित शीश झुकाती हूँ।

माँ की महिमा

माँ की महिमा से कोई नहीं अनजान है।
माँ की ममता तो कुदरत का वरदान है।
माँ के प्यार से ही बच्चों की
दुनिया शुरु होती है
माँ ही जीवन की
प्रथम गुरू होती है
माँ के आँचल में बहुत
सुकून मिलता है
माँ से ही कठिनाइयों में
संबल मिलता है
माँ के हाथों का भोजन भी
छप्पन भोग सा लगता है
माँ के आशीर्वाद से
मेरा ये जीवन चलता है
माँ जहाँ होती
वहाँ जन्नत होती है
बच्चों की खुशियाँ ही
माँ की मन्नत होती है
माँ ही सृष्टि की रचयिता है
माँ ही भाग्य विधाता है
माँ की महिमा अद्भुत है
माँ से ही बनता हर नाता है
माँ तेरे कदमों में सारा जहाँ हमारा है
माँ तेरे चरणों में सत् सत् नमन हमारा है।

वृद्धावस्था

कब्र में हैं पैर जिनके
शिथिल हैं शरीर जिनके
अंतिम विदाई के

वो क्षण बहुत
अमूल्य हैं उनके
ज्ञाता-दृष्टा ही कर्तव्य हैं

जो हो रहा है वो होने दें
वृद्धावस्था तो
स्वर्ण अवसर है

इसे व्यर्थ नहीं खोने दें
सुखी रहें शांत रहें
वैराग्य को धारण कर लें

तत्व चिंतन और
आत्मा-परमात्मा का
ध्यान कर लें।

लकड़ी का ऋण

जीवन भर जिनके साथ जिये
जीवन में जिनके लिए जिये,

वो साथ नहीं जाते कोई
चाहे कितने उपकार किये,

लेकिन जिनसे जीवन चले
उपकार उसी का भूल गये,

संग शरीर के कोई न जाता
बस सूखी लकड़ी साथ जले,

लकडी के ऋण को भूल न जाना
मन में एक संकल्प बनाना,

अतं समय आने के पहले
वृक्षारोपण करके जाना।

सुख-शांति

सुख-शांति नहीं मिलती
खूबसूरत भवनों से,
सुख-शांति नहीं मिलती
आकर्षक वस्त्रों से,
सुख-शांति नहीं मिलती
नई-नई गाडिय़ों से,
सुख-शांति नहीं मिलती
बहुत सारे रूपयों से,
सुख-शांति नहीं मिलती
आज्ञाकारी पुत्रों से,
सुख-शांति नहीं मिलती
छप्पन भोगों से,
सुख-शांति नहीं मिलती
बाहरी आडम्बरों से,
सुख-शांति तो मिलती है
निर्मल कोमल भावों से,
सुख-शांति तो मिलती है
आत्मा के विशुद्ध परिणामों से,..!

जलता हुआ दिया

जलते हुए दिये को देखो
उसकी काया मिट्टी की है,
पर उसकी ज्योति से
अंधकार दूर होकर
प्रकाश जगमगा रहा है,

मनुष्य की काया भी मिट्टी की है
पर उसकी आत्मा
ज्योतिशिखा है,
जिससे चेतना का
ऊर्ध्वगमन होता है,

आत्मा में
कोई मिलावट नहीं होती है,
कोई सजावट नहीं होती है,
कोई कड़वाहट नहीं होती है,
कोई गिरावट नहीं होती है,

जीवन की सार्थकता को
अगर जान लेंगे तो
आत्मा में परमात्मा की
खूबसूरत सी बस
मुस्कुराहट होती है।

समझौता

दो पत्थर के टकराने से
स्वाभाविक है
चिंगारी निकलना।

दो अचेतन बर्तन के टकराने से
स्वाभाविक है
उनका बजना।

दो व्यक्तियों के स्वार्थ टकराने से
स्वाभाविक है
उनका लड़ना।

दो कषायों के टकराने से
स्वाभाविक है
राग-द्वेष बढ़ना।

दो अनुरागों के टकराने से
स्वाभाविक है
बनना और बिगड़ना।

दो मोह के टकराने से
स्वाभाविक है
फिर समझौता करना।

जाग जाओ

जी लो
जीवन को
इससे पहले कि
मृत्यु आ जाये।

ढूंढ लो
सम्पदा को
इससे पहले कि
खजाना लुट जाये।

सुगंध ले लो
फूलों की
इससे पहले कि
वह मुरझा जाये।

जाग जाओ नींद से
डूब जाओ जीवन की
गहराई में इतना कि
मृत्यु भी मार न पाये।

अमरता की मेहंदी
रचा लो ऐसी कि
सब केसरिया ही
केसरिया हो जाये।

जिंदगी

लम्हों लम्हों से
बनती है जिंदगी
ख्वाब आँखों में
सजाती है जिंदगी

कभी फूल बनकर मन को
लुभाती है जिंदगी
तो कभी शूल बनकर
तन को चुभाती है जिंदगी

कभी बसंत बन जीवन को
महकाती है जिंदगी
कभी पतझड़ बन जीवन में
रूलाती है जिंदगी

कभी खुशियों भरा तोफा
सजाती है जिंदगी
कभी गमों का सितार
बजाती है जिंदगी

बस उदासियों का पर्दा
हटाकर तो देखो
मुस्कुराहटों के पुष्प भी
खिलाती है जिंदगी।

शोहरत

मिलती नहीं है शोहरत
मेहनत बिना यहाँ।

प्रतिभा बिना किसी की
परवाह नहीं यहाँ।

साथ नहीं जायेगा कुछ भी
सब रह जायेगा यहाँ।

नाम रहेगा बस अपने
हुनर का यहाँ।

कुछ करके दिखा दो
कुछ बनके बता दो।

वरना तुम्हें कभी भी
पूछेगा नहीं जहाँ।

रक्तबीज कोरोना

रक्तबीज कोरोना से, अब हमको नहीं रोना है
विपरीत परिस्थितियों में, साहस नहीं खोना है।।

शासन के साथ खडे होकर, हमको इसे हराना है
परिवार के साथ ही तो, यह समय बिताना है।।

भक्ति भाव से घर में ही, पूजा पाठ रचाना है।
देश की सुरक्षा का ये, दायित्व हमें निभाना है।।

रक्तबीज कोरोना को, इस दुनिया से हमें भगाना है।
विपदा की इस घडी में, हमें नहीं घबराना है।।

मिलकर सारी मानवता से, संकट हमें मिटाना है।
रक्तबीज कोरोना से, अब हमको नहीं रोना है।।

महामारी की जंग से, देश को विजयी बनाना है।
जिस मिट्टी में जन्म लिया है, उसका कर्ज चुकाना है।।

होली

होली के त्यौहार में,

खुशियाँ मिले अपार।

रंग प्रेम का चढ रहा,

जीवन बने बहार।।

जीवन बने बहार,

खुशी से इसको सींचो।

करना पर उपकार,

कभी मत दामन खींचो।।

कह "मीना"यह बात,

यही है उसकी बोली।

रहें सभी मिल साथ,

प्रेम की खेलें होली।।

जन्म-मरण

जनम-मरण के चक्कर में,

चेतन गोता खाए।

आखिर इस संसार में,

कब तक भटका जाए।।

कब तक भटका जाए,

ठिकाना नहीं मिलत है।

कैसे यह सुख पाए,

जगत में दुख ही दुख है।।

सुन"मीना"अब मान,

लूँ आतम सुख का कारण।

सम्यक ज्ञान को जान,

लूँ न फिर हो जनम-मरण।।

एकता का नजारा

राष्ट्रीय एकता का
अद्भुत नजारा देखा है।
अखन्ड भारत का
चमकता सितारा देखा है।
विपदा की इस घडी में
कोई भी अकेला नहीं है।
देश की एकता का प्रतीक
प्रधानमंत्री का इशारा देखा है।

जयकारा महावीर का

दुनिया में मेरे वीर का
जयकार हुआ है,
सृष्टि पर कोई ऐसा
चमत्कार हुआ है,
उस देश में कोरोना का
मिट जायेगा निशान,
जिस देश में महावीर का
अवतार हुआ है।

प्रेम

साथ तुम्हारा प्रियवर मेरे
जीवन में रस घोल रहा है।

प्रेम प्रीत की डोर पकड़कर
मनवा मेरा ढोल रहा है।

अनजानी राहों पर साथी
थाम लिया है हाथ तुम्हारा,

जीवन भर ये सफर सुहाना
कभी न छूटे साथ हमारा।

अवकाश

नारियों को कभी अवकाश नहीं मिलता
कभी प्यार तो कभी अहसास नहीं मिलता

पंखों में हौसला तो बहुत है लेकिन
उड़ने को कोई आकाश नहीं मिलता

यातना कितनी भी सहनी पड़े मगर
चेहरा फिर भी उसका उदास नहीं मिलता।

प्रतिशोध

प्रतिशोध की ज्वाला से
शांति होती भंग,
मन ही मन जलता रहे
दुनिया हो बेरंग,
बदले की हो भावना
जीना मुश्किल होय,
बेचैनी हर पल रहे
न जागे न सोय,
क्षमा हृदय में धार ले
बैरी रहे न कोई,
सच्चा सुख बस एक है
सब मंगलमय होई।

प्रबल

जीवन की प्रबल इच्छा ने
आज मानव को
मौत के कितने
नजदीक ला दिया
पाने की प्रबल चाहत में
जो पास था हमारे
वह भी न जाने
कहाँ खो गया?
हे ईश्वर!
अब तो सही राह दिखा देना
देश के लिये मर मिटने की
प्रबल इच्छा जगा देना।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

मीना विवेक जैन

पता

जैन दूध डेयरी

दीनदयाल चौक वारासिवनी

Mobile - 8821821849

हमारा देश इस समय लॉकडाउन के दौर से गुजर रहा है, जो हमारे परिवार और देश के सभी नागरिकों के कोरोना वायरस से बचाव के लिए है। वर्तमान में केवल यही एक कारगर उपाय है। समय कठिन है, परिस्थितियाँ विपरीत हैं। लेकिन यह भी सच है कि हर समस्या का समाधान अवश्य है। नियमों का अनुशासन के साथ पूर्णतः पालन विपरीत परिस्थितियों में हमारी कार्यक्षमता बढ़ा देती है।

आज अंतरा शब्दशक्ति से जुड़े रहना बहुत सार्थक प्रतीत हो रहा है इन्हीं दिनों इन रचनाओं का सृजन करके इस समय को सार्थक करने का प्रयास किया है।

डॉक्टर, नर्स, पुलिस, सफाई कर्मचारी और अन्य सेवा से जुड़े लोग आज हमारे परिवार के लिए, देश के प्रत्येक नागरिक के लिए अपनी सेवा का निर्वहन बड़ी कर्मठता और ईमानदारी से कर रहे हैं। उन लोगों के प्रति अपने और अपने परिवार की ओर से नमन करती हूँ, उनके प्रति सम्मान प्रकट करती हूँ और सुरक्षा के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ।

आइए हम सब मिलकर अपने, अपने परिवार, अपने देश की कोरोना वायरस से सुरक्षा के लिए लॉकडाउन के नियमों का पालन करें और कोरोना वायरस पर विजय प्राप्त करें।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-120-6

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/